केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 अजय कुमार सिंह*
श्रवण कुमार शुक्ल**

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध का उद्देश्य केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों से सम्बन्धित सम्प्राप्ति की तुलना करना है। शोधकर्ता ने अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए एस0 पी0 कुलश्रेष्ठ के प्रमापीकृत "मूल्य अध्ययन" प्रश्नावली (हिन्दी भाषा में संशोधित, परिवर्धित एवं अंगीकृत रूप, 1970) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति की दृष्टि से आंकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या करने के बाद पाया गया कि केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के आर्थिक तथा राजनैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया तथा केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना :

मूल्य हमारी निजी अभिवृति का वह कार्य है जिसकी उपयोगिता एक व्यक्ति, समाज, राष्ट्र अथवा विश्व के लिये उपयुक्त एवं महत्वपूर्ण है और साथ ही वह आस्तिकमय तथा निर्धारक प्रवृति भी है। मूल्य सम्बन्धों को संतुलित करके व्यवहारों में एकरूपता स्थापित करते हैं। मूल्य की कल्पना मानव अस्तित्व को उसको पूर्णरूप में स्वीकृत किये बिना सम्भव नहीं है। मूल्य की अपनी एक प्राकृतिक व्यवस्था है, मूल्य स्वयं एक व्यवस्था है।

मूल्य विकास के क्रम में मानव सबसे पहले इन्द्रिय विषय बोध अर्थात सुख व आनन्द को मूल्यवरण का आधार बनाता है। तत्पश्चात सुख के साथ ही मूल्यवरण में सुरक्षा का भाव भी समाहित हो जाता है और अन्त में अपने सुख, सुरक्षा एवं हित के साथ–साथ समाज के हित एवं सुरक्षा का भाव भी उसमें पनपता है तथा इसको दृष्टिगत रखते हुए वह मूल्यों का वरण करता है। मानव में समष्टि हित का यही भाव उसमें निहित उच्चतम मूल्यों का द्योतक है। उच्चतम मूल्यों से युक्त होने पर व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य मात्र अपने सुख, समृद्धि तक सीमित न रखकर समष्टि के सुख, समृद्धि एवं सुरक्षा तक विस्तृत कर देता है अर्थात् किसी भी व्यक्ति के जीवन में सन्तुष्टि के लिये सुख, समृद्धि एवं सुरक्षा प्रभावी कारक होते हैं, जिन्हें मूल्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य प्रभावित करते हैं।

आज व्यक्ति के जीवन मूल्य उसके प्रेरणा स्त्रोत माने जाते हैं। अतः जीवन के प्रत्येक क्षेत्र (सामाजिक, संवेगात्मक, गृह एवं स्वास्थ्य) में समायोजन आवश्यक है। जब कोई व्यक्ति किसी समाज का सदस्य बनता है, तब उसको समाज में रहने वाले व्यक्तियों का ध्यान रखते हुये अपने क्रियाकलापों में मूल्यों में समायोजन स्थापित करना पड़ता है। इस समायोजन हेतु आवश्यक गुणों के विकास के लिये व्यक्ति को संस्कारों एवं जीवन मूल्यों का ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है।

सभी मूल्यों का स्रोत मानव विवेक होता है तथा वे मानव के संचित अनुभव से उद्भूत होते हैं। वही उसे सद्–असद्, उचित–अनुचित का ज्ञान प्रदान करते हैं। मूल्य अपने में एक अवधारणा है तथा

* सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

** टी0जी0टी0 (गणित), शिक्षा विभाग, राजकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मालवीय नगर, नई दिल्ली एवं **Member, Cell For Human Values and Transformative Learning SCERT Delhi**

किसी भी वस्तु को मूल्यमय उद्घाटित करने के लिए तीन उद्देश्य हो सकते हैं :– पहला – यह कि उस वस्तु में स्वतः सिद्ध मूल्य है; दूसरा – यह कि वह उन विद्यमान मूल्यों की अभिवृद्धि करने में सहायता प्रदान करता है तथा तीसरा – यह कि उसमें कुछ अप्रकट मूल्य है जो परिस्थिति विशेष में प्रकट होंगे।

अध्ययन की आवश्यकता :

शिक्षा बालक का समाजीकरण कर, उसे समाज के अनुकूल बनाती है, जिससे कि बालक समाज में रहते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके। लेकिन वर्तमान समय में बालकों के अन्दर अपराधीकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वे समाज विरोधी कार्यो में लिप्त हो रहे हैं। जिससे उनका मूल्य पतन हो रहा है। क्या वे शिक्षा से मूल्य ग्रहण नहीं कर रहे हैं ? या फिर उन्हें विद्यालय में मूल्यों को प्राप्त करने का उचित वातावरण नही मिल पा रहा है ? ये प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मनुष्य समाज में ही जन्म लेता है समाज में ही शिक्षा ग्रहण करता है और समाज में ही अपना समायोजन करता है। प्रत्येक समाज के अपने कुछ निर्धारित नियम एव नैतिक मूल्य होते हैं। क्या आज की शिक्षा विद्यार्थियों को नैतिक मूल्य उत्पन्न करने में समर्थ है ? यह एक ज्वलन्त प्रश्न है इसी, आलोक में इस शोध समस्या का विचार शोधार्थी के मस्तिष्क में आया। प्रायः देखा जा रहा है कि लोग अपने बच्चों को राजकीय विद्यालयों की अपेक्षा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में पढ़ाना अधिक पसन्द कर रहे हैं। अतः शोधार्थी ने केन्द्रीय विद्यालयों तथा उत्तर प्रदेश के राजकीय विद्यालयों मे शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों में मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन का निश्चय किया। दो अलग तरह के विद्यालयों (राजकीय विद्यालय तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालय) में मूल्यों के विकास पर किस प्रकार कार्य किया जाता है, इसका भी अध्ययन होना चाहिये। जिसे ध्यान में रखकर सुधारात्मक कदम बढ़ाया जा सके।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :

- गुप्ता (2001) "भारतीय शिक्षित जनमानस में विविध जीवन मूल्यों के सापेक्ष महत्वों का अध्ययन" के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि सम्पर्क समूह के द्वारा आत्मस्वीकृत मूल्य वरीयता क्रम के विश्लेषण में वर्तमान एवं भावी शिक्षकों के मध्य पनप रही स्थिति की झलक मिलती है, इनमें नैतिकता और बौद्धिकता सर्वोपरि है। सामाजिक, भावात्मक, व्यावहारिकता तथा आध्यात्मिकता को मध्य स्थान प्रदान किया गया। भौतिकता तथा राजनैतिकता अंतिम सोपान पर रहे। जबकि कलात्मकता तथा सांस्कृतिकता, उससे कुछ उच्च स्थान पर भारतीय शिक्षित जनमानस में विद्यमान हैं।
- श्रीवास्तव (2004) "ए स्टडी ऑफ स्कूल एक्टीविटीज प्रमोटिंग वैल्यू इन्हैरेंट इन फंडामेंटल ड्यूटीज मेंशन्ड इन द इंडियन कॉन्स्टीट्यूशन" में अध्ययन से यह परिणामित हुआ कि रायपुर एवं छत्तीसगढ़ के मिसनरी स्कूलों में कर्तव्य जागरूकता सर्वोच्च तथा लखनऊ के सरकारी स्कूल में निम्न पाई गई। राज्य स्तर पर छत्तीसगढ़ प्रथम तथा दिल्ली अंतिम रहा। छात्रों में कर्तव्य जागरूकता छात्राओं की अपेक्षा सार्थक रूप से कम स्तर पर रही।
- अनिल कुमार एवं आईशाबी (2008) "स्टूडेंट्स अवेयरनैस ऑफ वेल्यूज इन द कॉण्टेंट ऑफ सैकेण्डरी लेविल इंग्लिश" अध्ययन के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि सैकेण्डरी स्तर के अंग्रेजी भाषा के पाठ्यक्रम छात्रों के आयु वर्ग के लिये आवश्यक मूल्यों से समृद्ध है। 36 प्रतिशत छात्रों में मूल्यों के प्रति जागरूकता पाई गई। छात्रों और छात्राओं की मूल्यों के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- लिंडहोल्म (2009) "हेल्थ मोटिव्स एण्ड लाईफ वेल्यूज–ए स्टडी ऑफ यंग पर्सन्स रीजंस फार हेल्थ" में अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि नवयुवकों के स्वास्थ्य अनुभवों तथा विचारों को समझना, उनके स्वास्थ्य उद्देश्यों को जाने बिना संभव नहीं है। जो आंतरिक, बाहरी तथा मौलिक होते हैं। स्वास्थ्य उद्देश्यों से ही नवयुवकों का जीवन अर्थपूर्ण होता है। विभिन्न प्रकार के जीवन मूल्य नवयुवकों के स्वास्थ्य को स्पष्ट करते हैं, कि वे क्यों स्वस्थ हैं। विभिन्न स्कूलों के नवयुवकों के जीवन मूल्यों तथा स्वास्थ्य उद्देश्यों में भिन्नता पाई गई।
- यादव, शालिनी (2012) "इमोशनल इन्टेलीजेंस एण्ड वैल्यूज ऑफ एडोलोसेंट्स स्टडींइग इन गवर्नमेंट एण्ड नॉन गवर्नमेंट स्कूल्स" में प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुये कि सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के किशोरों के बौद्धिक स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, दोनों का बौद्धिक स्तर सामान्य पाया गया। बालक बालिकाओं का बौद्धिक स्तर समान ही

रहा। सरकारी विद्यालयों के किशोरों ने उच्च स्तर अन्तर्निहित मूल्यों को तथा निम्न स्तर धार्मिक मूल्यों को प्रदान किया गया। गैर सरकारी विद्यालयों के किशोरों की तुलना में सरकारी विद्यालयों के किशोरों के सामाजिक, लोकतान्त्रिक, ज्ञानात्मक व परिवार मान मूल्य उच्च पाये गये।

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

शून्य परिकल्पना :

1. केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमांकन :

1. शोध हेतु प्रतिदर्श का चयन गोरखपुर जनपद के मुख्यालय स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों से लिया जायेगा।
2. शोधकार्य हेतु कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों को लिया जायेगा।
3. प्रस्तुत शोध में केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कालेज को ही सम्मिलित किया जायेगा।
4. ग्रामीण विद्यार्थियों से तात्पर्य निवास के ग्रामीण पष्ठभूमि तथा शहरी विद्यार्थियों से तात्पर्य निवास के शहरी पष्ठभूमि से है ।

शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन की शोध विधि ''वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रणाली'' से सम्बन्धित है।

अध्ययन के प्रतिदर्श :

प्रस्तुत लघु शोध में उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन के अन्तर्गत गोरखपुर जिले का केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कॉलेज का चयन सोद्देश्य विधि से किया गया है। इस अध्ययन में अनुपातिक प्रणाली के तहत केन्द्रीय विद्यालय गोरखपुर के 150 एवं राजकीय इण्टर कालेज के 150 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है, जिसका विवरण निम्नानुसार है :–

क0सं0	विद्यालय	ग्रामीण छात्र	शहरी छात्र	सम्पूर्ण योग
1.	केन्द्रीय विद्यालय नं0 1 वायुसेना, गोरखपुर	75	75	150
2.	राजकीय जुबिली इण्टर कॉलेज, गोरखपुर एवं राजकीय कन्या इण्टर कॉलेज, गोरखपुर	75	75	150
	योग	**150**	**150**	**300**

प्रस्तुत अध्ययन के उपकरण :

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन के लिए **एस0 पी0 कुलश्रेष्ठ** के प्रमापीकृत "मूल्य अध्ययन" प्रश्नावली (हिन्दी भाषा में संशोधित, परिवर्धित एवं अंगीकृत रूप, 1970) का प्रयोग किया गया है जिसमें सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों से सम्बन्धित प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ :

शोधकर्ता का प्रमुख उद्देश्य केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोधकर्ता ने उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को दृष्टि में रखते हुए निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है :–

मध्यमान (M) : मध्यमान का प्रयोग चरों पर प्राप्त अंकों का औसत ज्ञात करने हेतु किया गया है। इसमें भी दीर्घ विधि का प्रयोग किया गया है।

मानक विचलन : मानक विचलन का प्रयोग समूह के प्राप्तांकों का विचलन तथा मानक त्रुटि ज्ञात करने हेतु किया गया है।

t परीक्षण : t परीक्षण का प्रयोग समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए किया गया है।

विश्लेषण एवं परिणाम :

उद्देश्य सं0 – 01 : केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना सं0 – 01 : केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 – 01

टी–अनुपात केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के ग्रामीण विद्यार्थियों में 'सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों सम्बन्धी सम्प्राप्ति'

मूल्य	न्यादर्श (N)	केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण विद्यार्थी		राजकीय इण्टर कॉलेज के ग्रामीण विद्यार्थी		t मूल्य	स्वीकृत / अस्वीकृत
		मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)		
सैद्धान्तिक (T)	75	45.6	3.13	44.8	4.43	1.27	स्वीकृत
आर्थिक (E)	75	43.1	3.43	44.8	4.19	2.71	अस्वीकृत
सौन्दर्यात्मक (A)	75	39.0	4.30	38.0	5.60	1.22	स्वीकृत
सामाजिक (S)	75	37.4	4.99	38.0	5.20	0.72	स्वीकृत
राजनैतिक (P)	75	36.3	5.25	34.6	5.16	2.00	अस्वीकृत
धार्मिक (R)	75	39.0	4.30	39.7	3.90	1.04	स्वीकृत

ग्राफ संख्या – 01

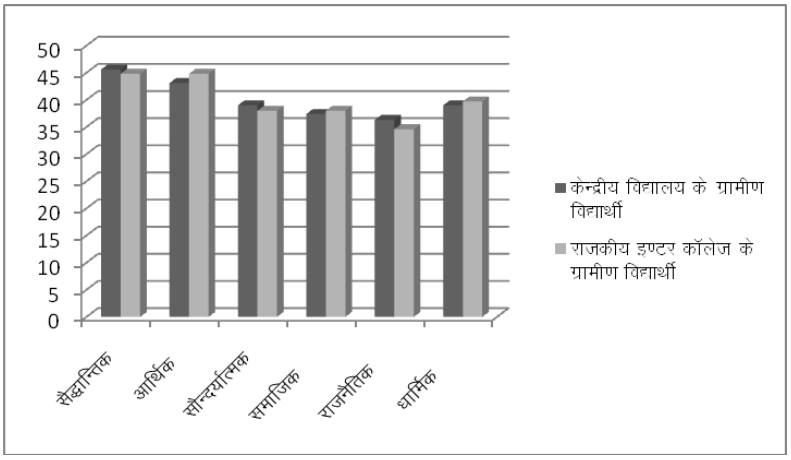

सारणी संख्या – 01 में प्रदर्शित परिणाम सम्बन्धी आँकड़ों के अनुसार स्पष्ट है कि केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के आर्थिक तथा राजनैतिक मूल्यों सम्बन्धित मध्यमानों के टी मूल्य क्रमशः 2.71 तथा 2.00 हैं, जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीमान 1.97 से अधिक पाये गये हैं। अतः निराकरणीय परिकल्पना ''केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।'' इन मूल्यों के लिये 0.05 सार्थकता स्तर पर निरस्त की जाती है। जबकि सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों सम्बन्धित मध्यमानों के टी मूल्य क्रमशः 1.27, 1.22, 0.72 तथा 1.04 हैं, जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीमान 1.97 से कम पाये गये हैं। अतः निराकरणीय परिकल्पना ''केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।'' इन मूल्यों के लिये 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकार की जाती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ''केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के आर्थिक तथा राजनैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

जहाँ सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक तथा राजनैतिक मूल्यों का मध्यमान केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के ग्रमीण विद्यार्थियों के अधिक हैं, वहीं आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्य का मध्यमान राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के अधिक हैं।

उद्देश्य सं0 – 02 : केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना 02 : केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 – 02

टी–अनुपात केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय इण्टर कालेज के शहरी विद्यार्थियों के में 'सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों सम्बन्धी सम्प्राप्ति'

मूल्य	न्यादर्श (N)	केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के शहरी विद्यार्थी		राजकीय इण्टर कॉलेज के शहरी विद्यार्थी		t मूल्य	स्वीकृत/ अस्वीकृत
		मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)		
सैद्धान्तिक (T)	75	48.0	3.26	45.6	5.43	3.28	अस्वीकृत
आर्थिक (E)	75	44.5	4.63	46.0	6.10	1.70	स्वीकृत
सौन्दर्यात्मक (A)	75	40.8	4.33	37.6	7.71	3.13	अस्वीकृत
सामाजिक (S)	75	36.0	5.40	38.9	7.05	2.82	अस्वीकृत
राजनैतिक (P)	75	36.2	5.83	36.4	6.71	0.19	स्वीकृत
धार्मिक (R)	75	34.8	4.92	35.6	6.68	0.83	स्वीकृत

ग्राफ संख्या – 02

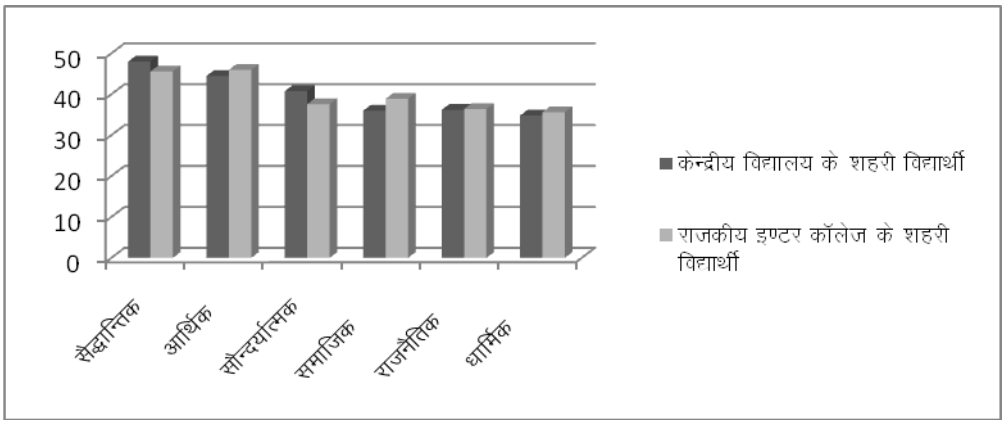

सारणी संख्या – 02 में प्रदर्शित परिणाम सम्बन्धी आँकड़ों के अनुसार स्पष्ट है कि केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यों सम्बन्धित मध्यमानों के टी मूल्य क्रमशः 3.28, 3.13 तथा 2.82 हैं, जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीमान 1.97 से अधिक पाये गये हैं। अतः निराकरणीय परिकल्पना ''केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।'' इन मूल्यों के लिये 0.05 सार्थकता स्तर पर निरस्त की जाती है। जबकि आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों सम्बन्धित मध्यमानों के टी मूल्य क्रमशः 1.70, 0.19 तथा 0.83 हैं, जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीमान 1.97 से कम पाये गये हैं। अतः निराकरणीय परिकल्पना '' केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।'' इन मूल्यों के लिये 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकार की जाती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ''केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

जहाँ सैद्धान्तिक तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यों का मध्यमान केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के शहरी विद्यार्थियों के अधिक हैं, वहीं आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्य का मध्यमान राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के अधिक हैं। जबकि राजनैतिक मूल्य के मध्यमान लगभग बराबर पाये गये।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष :

1. केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के आर्थिक तथा राजनैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. केन्द्रीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शोध की उपयोगिता :

यह पूर्णरूपेण सत्य है कि बच्चों के जीवन मूल्यों पर परिवार का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। परन्तु इसके अतिरिक्त विद्यालय का वातावरण, पाठयक्रम, शिक्षकों का व्यवहार तथा समाज का वातावरण भी बच्चों के अन्दर विकसित होने वाले जीवन मूल्यों पर अपना अलग–अलग प्रकार से प्रभाव डालता है। शिक्षा सभी देशों की रीढ़ है और जीवन मूल्य सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया का परिणाम है। आज के आधुनिक युग में मूल्यों का बच्चों में समावेश करना समाज, परिवार तथा राष्ट्र की माँग है। इसलिए आवश्यक है कि छात्रों में मूल्यों का विकास किया जा सके। जीवन मूल्य मानव जीवन का आधार है इसका पालन

करने से ही मनुष्य लौकिक तथा पारलौकिक जीवन को सफल बना सकता है। वह समाज तथा परिवार के सभी सदस्यों का स्नेह प्राप्त कर सकता है। संतुलित व्यक्तित्व के विकास में मूल्यों का विशेष महत्व है।

इस शोध की शैक्षिक उपयोगिता इस प्रकार है –

1. मूल्यों के परीक्षण के परिणामों से यह निष्कर्श निकलता है कि विद्यालय का वातावरण पाठ्यक्रम, समाज तथा परिवार का वातावरण छात्रों के अन्दर मूल्यों का विकास करता है अतः विद्यालय, समाज तथा परिवार का वातावरण नैतिकता से परिपूर्ण तथा स्नेह से युक्त बनाना चाहिए।
2. समाज तथा परिवार के प्रत्येक सदस्य का यह एक मूल कर्तव्य होना चाहिए कि वह दूसरों के साथ सदैव प्रेम तथा स्नेहपूर्ण व्यवहार करे जिससे छात्रों में इस गुण का विकास हो सके। क्योंकि छात्र अनुकरण से सर्वाधिक सीखता है।

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अध्यापकों शिक्षाविदों, शिक्षाधिकारियों एवंश्शासन के लिए बहुत उपयोगी है। विद्यार्थियों में पाये जाने वाले मूल्यों को प्रभावित करने वाले कारणों को जानकर विद्यार्थियों के व्यवहार को वांछित दिशा में मोड़ा जा सकता है। बिना उपयुक्त कारण को जाने उनमें सुधार की बात सोचना समय, शक्ति व धन का दुरूपयोग तथा प्रयास को असफल बनाना है। अतः मूल्यों की जानकारी प्राप्त करके ही अध्यापक, शिक्षाविद तथा शिक्षाधिकारी छात्रों में नैतिक मूल्यों के विकास में बहुत कुछ कल्याणकारी कार्य कर सकते हैं।

भावी शोध हेतु सुझाव :

जीवन मूल्यों का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है, इसे हम सीमा में नहीं बांध सकते है। अध्ययन कार्य के समय अनेक ऐसी नैतिक समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ जिस पर यदि शोध कार्य किया जाय तो बहुत से ऐसे तथ्य प्रकाश में आ सकते हैं जो शोध के परिणामों की पुष्टि कर सकते है तथा उसे परिवर्तित एवं परिमार्जित भी कर सकते है।

वर्तमान शोध सीमित समय व साधनों में किया गया है, जिससे शोध कार्य हेतु नामांकित कई क्षेत्रों को छोड़ दिया गया है। अतः मूल्य व नैतिकता से जुड़े कुछ क्षेत्र निम्नलिखित है जिस पर शोध कार्य किया जा सकता है–

- विद्यार्थियों में मूल्यों का अध्ययन विभिन्न स्तर की कक्षाओं पर किया जा सकता है।
- इसका अध्ययन विभिन्न आयु स्तर के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
- मूल्यों पर सामाजिक तथा आर्थिक स्थितियों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- सामाजिक परम्पराओं, मान्यताओं का छात्रों के मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- सामान्य तथा पब्लिक विद्यालयों के छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- मूल्यों की शिक्षा हेतु विविध पाठ्य–सहगामी क्रियाओं, जनसंचार, विभिन्न विषयों के मूल्य परक शिक्षण, सामाजीकरण, मूल्य विश्लेषण, योग, जीवनी पाठन आदि के प्रभावोत्पादकता जानने के लिए अनुसंधान कार्य किये जा सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- कुमार, (2013) "वैल्यूज ऑफ सीनियर सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स" जरनल ऑफ एजुकेशनल एण्ड साइक्लोजिकल रिसर्च, वा0 3(1) पृ0 8–10
- यादव, शालिनी (2012) "इमोशनल इन्टेलीजेंस एण्ड वैल्यूज ऑफ एडोलोसेंट्स स्टडींइग इन गवर्नमेंट एण्ड नॉन गवर्नमेंट स्कूल्स" जरनल ऑफ द एजुकेशनल एण्ड साइक्लोजी रिसर्च, वा0 2(2) पृ0 137–140
- गुप्ता, भावना एवं यादव, आर0 के0 (2011) "एडजस्टमेंट एण्ड वैल्यू ऑफ अडोल्सेंट मेल एण्ड फीमेल स्टूडेंट्स" जरनल ऑफ द एजुकेशनल एण्ड साइक्लोजी रिसर्च, वा0 2(2) पृ0 112–114
- दास, एवं सत्संगी, (2009) "वेल्यू एण्ड लाइफ सेटिसफेक्शन" आई0जे0पी0ई0 पटना, अंक 40(1–2) पृष्ठ सं0 19–22
- कपूर, अर्चना (2009) "पारिवारिक परिवेश का बालक एवं बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 28 अंक 2, जुलाई दिसम्बर 2009

- गुप्ता, आर0पी0 (2007) ''उच्च शिक्षण संस्थाओं की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष 26 अंक 2
- डुल, आई0 एवं सुमन (2007) "वैल्यूज ऑफ द स्कूल स्टूडेंटस इन रिलेशन टू जेंडर एण्ड सोशियो इकोनोमिक स्टेटस" एजुट्रेक्स, हैदराबाद वा0 6(12) पृ0 36–39
- सारस्वत, आर0 (2005) "श्रीमद् भगवद्गीता में निहित सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यो का उच्चस्तर के पाठ्यक्रम में समावेश" अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, डी0ई0आई0 दयालबाग।
- लिंडहोल्म, एच0 (2009) "हेल्थ मोटिव्स एण्ड लाईफ वेल्यूज–ए स्टडी ऑफ यंग पर्सन्स रीजंस फार हेल्थ" इंटरनेशनल डिर्जटेशन एबस्ट्रेक्ट, वर्ष 71, अंक 1
- काश्मीरी, एम0 (2008) "ए स्टडी ऑफ द मोस्ट बेसिक लाइफ वैल्यूज ऑफ टीचर्स एण्ड स्टूडेंटस इन पाकिस्तान" पीएच0डी0 शोध, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ माडर्न लैंग्वेज, इस्लामाबाद (पाकिस्तान)

Website References :

- www.answer.com/topic/mental/disorder-2
- ww.accessmylibrary.com/article-1G1-196533387/life-satisfaction-self-esteem.html
- www.aiims.edu/india-mentalhealth-country-profile/index.htm
- www.bhaskar.com/.../0901221449_management_funda.htmlhttp://
- connect.in.com/marital-adjustment-in-tribal-and-nontribal-working-women/profile-1743081.html
- http://en.wikipedia.org/w/index.php?title=Life_satisfaction&oldid=507263888

●